Vol. 14, Sp. Issue: 1, December: 2025
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

भारतीय ज्ञान प्रणाली के माध्यम से शिक्षक क्षमता का निर्माण और व्यावसायिक विकास

डा. प्रियंका तिवारी

विप्र कला वाणिज्य एवं शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय

रायपुर, छत्तीसगढ

प्रस्तावना— भारतीय ज्ञान परम्परा अत्यंत समृद्ध, सफल और अद्वितीय है। इसने अपने विकास क्रम में नैतिक, भौतिक, आध्यात्मिक एवं बौद्धिक मूल्यों को उच्च प्राथमिकता प्रदान की है। यह परम्परा ऋग्वैदिक काल से निरंतर प्रवाहित होती आ रही है। साहित्यिक ज्ञान के साथ-साथ भारतीय ज्ञान प्रणाली ने शारीरिक, आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक ज्ञान के महत्व को भी समान रूप से रेखांकित किया है। इसी भारतीय ज्ञान प्रणाली के माध्यम से भारत ने संपूर्ण विश्व को आध्यात्मिक समरसता, योग, आयुर्वेद एवं मानव कल्याण के विविध आयामों का ज्ञान प्रदान किया है, जिसे आज अंतरराष्ट्रीय समुदाय भी व्यापक रूप से स्वीकार कर रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 भारत के शैक्षिक परिदृश्य में एक व्यापक परिवर्तन का संकेत देती है, जो भारतीय ज्ञान प्रणाली के महत्व पर विशेष बल देती है। यह नीति भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को पुनर्जीवित करने, शिक्षा में अन्तःविषयकता बढ़ाने, पारंपरिक एवं आधुनिक ज्ञान को समन्वित करने तथा समकालीन सामाजिक चुनौतियों के समाधान हेतु भारतीय ज्ञान को पाठ्यचर्या में समाहित करने का मार्ग प्रशस्त करती है। भारतीय ज्ञान प्रणाली ज्ञान को बाहरी सूचना-संग्रह नहीं, बल्कि आन्तरिक अनुभूति के रूप में स्वीकार करती है। यह शिक्षक क्षमता निर्माण के सिद्धान्त पर आधारित है, जिसके अनुसार शिक्षक स्वयं ज्ञान का आत्मसात् करे तथा उसे सरल, प्रभावी और मूल्यपरक रूप में विद्यार्थियों तक पहुँचाए। अतः शिक्षक को सतत् चिंतन-मनन तथा आत्मविकास के माध्यम से अपने विषय-ज्ञान और शिक्षण-कौशल को सुदृढ़ करने की आवश्यकता होती है। NEP 2020 में भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) को शिक्षा प्रणाली में समाहित करने पर विशेष बल दिया गया है। शिक्षक के व्यावसायिक विकास में भारतीय ज्ञान प्रणाली के तत्व—जैसे प्राचीन विज्ञान, कला, योग, दर्शन—को समझना और उन्हें शिक्षण में एकीकृत करना अत्यंत आवश्यक माना गया है। भारतीय ज्ञान प्रणाली आधारित क्षमता निर्माण केवल कौशल-विकास का माध्यम ही नहीं, बल्कि चरित्र-निर्माण, नैतिक नेतृत्व और आत्म-परिवर्तन की समग्र प्रक्रिया है।

अध्ययन की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

भारतीय ज्ञान प्रणाली में शिक्षक क्षमता निर्माण और व्यावसायिक विकास एक गहन, बहुआयामी एवं मूलभूत विषय है। भारतीय परम्परा में शिक्षक को केवल ज्ञान प्रदान करने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि चरित्र-निर्माणकर्ता, मार्गदर्शक और प्रेरक व्यक्तित्व माना गया है। इस अध्ययन की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि 'पुरुषार्थ चतुष्टय' धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष पर आधारित है, जो भारतीय दर्शन में जीवन के चार प्रमुख उद्देश्यों के रूप में स्वीकारे गए हैं। इस आधार पर शिक्षक का विकास केवल व्यवसायिक दक्षता तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह नैतिकता (धर्म), संतुलित जीवन (काम), आजीविका (अर्थ) और आत्म-साक्षात्कार (मोक्ष) की दिशा में विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करता है। भारतीय गुरु-शिष्य परम्परा शिक्षा को मात्र ज्ञान-आदान-प्रदान की प्रक्रिया न मानकर व्यक्तिगत मार्गदर्शन, मूल्य-संचार और समग्र विकास का साधन मानती है। इस दृष्टि से शिक्षक को विद्यार्थियों की विशिष्ट क्षमताओं, आवश्यकताओं एवं व्यक्तित्व के अनुरूप शिक्षण प्रदान करना चाहिए। भारतीय ज्ञान प्रणाली शिक्षक के आन्तरिक शुद्धिकरण, आत्मानुशासन, विवेकशीलता और उच्च चरित्र को व्यावसायिक विकास की आधारशिला मानती है। इस दृष्टि में शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान-संचार मात्र नहीं, बल्कि सांस्कृतिक जागरूकता, नैतिकता और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना विकसित करना है। अतः शिक्षक को भारतीय संस्कृति, मूल्य एवं आदर्शों का प्रतिरूप होना चाहिए।

Vol. 14, Sp. Issue: 1, December: 2025
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

अध्ययन का महत्व

भारतीय ज्ञान प्रणाली के सिद्धांतों एवं मूल्यों को शिक्षक क्षमता निर्माण तथा व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों में समाहित करना वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में अत्यंत आवश्यक है। इसके महत्व को निम्नानुसार व्याख्यायित किया जा सकता है—

- IKS नैतिक अखंडता, चरित्र निर्माण, कर्तव्यपरायणता एवं आत्मनिर्भरता जैसे शाश्वत मूल्यों पर आधारित है। इन मूल्यों के आत्मसात् से शिक्षक विद्यार्थियों में भी जीवन-मूल्य एवं भारतीय सांस्कृतिक दृष्टि का संचार कर सकते हैं।
- IKS पारम्परिक शिक्षण वाद-विवाद, संवाद, अनुभवजन्य शिक्षा को आधुनिक शिक्षाशास्त्र के साथ जोड़कर शिक्षण को अधिक व्यवहारिक, सृजनात्मक और स्थायी बनाता है।
- यह शिक्षकों में नवाचार, आलोचनात्मक चिंतन, सृजनशीलता और वैकल्पिक शिक्षण पद्धतियों को विकसित करता है।
- IKS आधारित प्रशिक्षण से शिक्षक में मातृभूमि, संस्कृति और राष्ट्रीय मूल्यों के प्रति सम्मान की भावना विकसित होती है।
- यह समग्र दृष्टिकोण अपनाता है, जिसमें विज्ञान, कला, दर्शन, योग, चिकित्सा आदि जीवन के विविध पक्ष परस्पर जुड़कर शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाते हैं।

समस्या का कथन

शिक्षक क्षमता निर्माण और व्यावसायिक विकास न केवल शिक्षक-व्यक्तित्व बल्कि संपूर्ण समाज के विकास के लिए आवश्यक है। इस अध्ययन में यह विश्लेषण किया गया है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली किस प्रकार शिक्षकों में क्षमता निर्माण एवं उनके व्यावसायिक विकास को प्रभावित करती है। अतः इस शोध का मुख्य कथन है— "भारतीय ज्ञान प्रणाली के माध्यम से शिक्षक क्षमता निर्माण एवं व्यावसायिक विकास का अध्ययन।"

मुख्य शब्दों की परिचालन परिभाषाएँ

- **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020)** – भारत सरकार द्वारा प्रस्तावित नवीन शिक्षा ढांचा।
- **भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS)** – भारत की पारम्परिक, सांस्कृतिक एवं दार्शनिक ज्ञान परम्पराओं का समुच्चय।
- **परिवर्तनकारी शिक्षा** – शिक्षा जो व्यक्तित्व, मूल्य और व्यवहार में परिवर्तन लाती है।
- **शिक्षक क्षमता निर्माण** – शिक्षक के ज्ञान, कौशल, मूल्यों एवं दक्षताओं का विकास।
- **व्यावसायिक विकास** – शिक्षक की पेशेवर उन्नति हेतु सतत प्रशिक्षण, अभ्यास और आत्ममूल्यांकन का प्रक्रिया।

चर

- **स्वतंत्र चर:** भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS)
- **आश्रित चर:** शिक्षक क्षमता निर्माण एवं व्यावसायिक विकास

अध्ययन के उद्देश्य

1. भारतीय ज्ञान प्रणाली के माध्यम से शिक्षक क्षमता निर्माण का विश्लेषण करना।
2. IKS के माध्यम से शिक्षक व्यावसायिक विकास का अध्ययन करना।
3. IKS का NEP 2020 पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1. भारतीय ज्ञान प्रणाली का शिक्षक क्षमता निर्माण पर सार्थक प्रभाव पाया जाएगा।

Vol. 14, Sp. Issue: 1, December: 2025
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

2. भारतीय ज्ञान प्रणाली का शिक्षक व्यावसायिक विकास पर सकारात्मक प्रभाव होगा।
3. भारतीय ज्ञान प्रणाली का NEP 2020 के प्रावधानों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पाया जाएगा।

समस्या का दायरा

- वर्तमान में लागू शिक्षक प्रशिक्षण, क्षमता निर्माण और व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों की सीमाएँ और चुनौतियाँ।
- IKS के मूल्यों—गुरु-शिष्य परम्परा, योग, ध्यान, समग्र शिक्षा—के प्रभाव का विवेचन।
- IKS आधारित प्रशिक्षण के बाद शिक्षण विधियों, कक्षा-प्रबंधन और शिक्षक-छात्र संबंधों में आए परिवर्तनों का विश्लेषण।

सीमांकन एवं क्षेत्र

- अध्ययन केवल छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले तक सीमित है।
- केवल निजी शिक्षण महाविद्यालयों के प्राध्यापक शामिल किए गए हैं।
- IKS के सभी पहलुओं के स्थान पर केवल विशेष एवं प्रासंगिक आयामों का अध्ययन किया गया है।

साहित्य समीक्षा

1. हालोई एवं खरबिरिबाई (2025)- इनका अध्ययन "NEP—2020 के परिप्रेक्ष्य में IKS का शिक्षक शिक्षा में एकीकरण" पर आधारित था। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि IKS आधारित पाठ्यक्रम, बहुविषयकता एवं नवाचार शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाते हैं।

2. ललिताकुमारी एवं विजयरानी (2025)- इस अध्ययन में क्षमता निर्माण कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया गया। निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि ऐसे कार्यक्रम शिक्षकों के कौशल, शिक्षण-शैली और पेशेवर दक्षता में सुधार लाते हैं।

3. पुत्रा एवं रेनाल्डो (2024)- इन्होंने IKS आधारित क्षमता निर्माण, संगठनात्मक समर्थन एवं व्यावसायिक विकास का विश्लेषण किया। परिणामों के अनुसार, क्षमता निर्माण से शिक्षक का आत्मविश्वास, कक्षा प्रबंधन एवं छात्र सहभागिता में उल्लेखनीय सुधार पाया गया।

शोध अंतराल

उपलब्ध साहित्य के आधार पर स्पष्ट हुआ कि IKS पर अनेक अध्ययन उपलब्ध हैं, किन्तु "भारतीय ज्ञान प्रणाली के माध्यम से शिक्षक क्षमता निर्माण एवं व्यावसायिक विकास" पर **महाविद्यालयीन प्राध्यापकों के संदर्भ में विशिष्ट और तुलनात्मक शोध अत्यंत सीमित** हैं। इस अध्ययन ने इसी शोध-अभाव को पूरा करने का प्रयास किया है।

अनुसंधान विधि

- अनुसंधान डिज़ाइन- मात्रात्मक अनुसंधान पद्धति।
- जनसंख्या एवं न्यादर्श - रायपुर जिले के 4 शिक्षा महाविद्यालयों के 40 प्राध्यापक।
- न्यादर्श विधि- उद्देश्यपूर्ण (Purposive Sampling)
- आंकड़ों का स्रोत- प्राथमिक स्रोत—स्वनिर्मित प्रश्नावली।
- शोध उपकरण- स्वनिर्मित, मान्य एवं विश्वसनीय प्रश्नावली।
- आंकड़ों का संग्रह- शोधकर्ता द्वारा प्रत्यक्ष संकलन।

सांख्यिकीय विश्लेषण- मध्यमान, मध्यिका, मानक विचलन तथा t-परीक्षण का उपयोग।

सम्बन्धों की गणना के बिंदु

- IKS और शिक्षक क्षमता निर्माण के मध्य संबंध

Vol. 14, Sp. Issue: 1, December: 2025
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

- IKS और व्यावसायिक विकास के मध्य संबंध
- IKS और NEP–2020 के मध्य संबंध

सारणीकरण एवं व्याख्या

संग्रहित आंकड़ों को वर्गीकृत, सारणीबद्ध तथा व्यवस्थित कर t-परीक्षण एवं वर्णनात्मक सांख्यिकी के आधार पर व्याख्या की गई। प्रत्येक परिकल्पना के लिए पृथक सारणी तैयार की गई।

सारणीकरण, सांख्यिकीय विश्लेषण, व्याख्या एवं निष्कर्ष

सारणी 1 : भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) एवं शिक्षक क्षमता निर्माण के मध्य संबंध

n = 40 शिक्षण प्राध्यापक

क्रम	चर	N	Mean (औसत)	SD (मानक विचलन)	t-मूल्य	p-मूल्य
1	भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) स्कोर	40	78.45	6.82	**6.12**	**p < .01**
2	शिक्षक क्षमता निर्माण स्कोर	40	83.16	7.09		

व्याख्या

t-मान 6.12 (p < .01) दर्शाता है कि **IKS स्कोर और क्षमता निर्माण स्कोर के मध्य अत्यंत सार्थक और सकारात्मक संबंध** पाया गया। अर्थात जिन शिक्षकों ने IKS के तत्वों—योग, नैतिकता, मूल्य, चिंतन, समग्र दृष्टि—को समझा और अपनाया, *उनकी क्षमता निर्माण का स्तर उल्लेखनीय रूप से बढ़ा हुआ पाया गया।*

सारणी 2 : भारतीय ज्ञान प्रणाली एवं शिक्षक व्यावसायिक विकास के मध्य संबंध

क्रम	चर	N	Mean	SD	t-मूल्य	p-मूल्य
1	IKS स्कोर	40	78.45	6.82	**5.74**	**p < .01**
2	व्यावसायिक विकास स्कोर	40	81.52	6.33		

व्याख्या

t-मान 5.74 (p < .01) यह दर्शाता है कि IKS का शिक्षकों के व्यावसायिक विकास पर अत्यंत महत्वपूर्ण और सकारात्मक प्रभाव है। अध्ययन में पाया गया कि भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) के निरंतर संपर्क में रहने वाले शिक्षक बेहतर कक्षा प्रबंधन, उच्च स्तर की विद्यार्थी संलग्नता, उन्नत शिक्षण कौशल, अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण तथा बढ़े हुए आत्मविश्वास का प्रदर्शन करते हैं। यह परिणाम स्पष्ट रूप से संकेत करता है कि IKS-आधारित प्रशिक्षण शिक्षकों की पेशेवर क्षमता, व्यवहारिक दक्षता और कक्षा-परिस्थिति से सामंजस्य स्थापित करने की योग्यता को प्रभावी रूप से बढ़ाता है।

सारणी 3 : IKS एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मध्य प्रभावात्मक संबंध

क्रम	चर	N	Mean	SD	t-मूल्य	p-मूल्य
1	IKS स्कोर	40	78.45	6.82	**6.88**	**p < .01**

Vol. 14, Sp. Issue: 1, December: 2025
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

क्रम	चर	N	Mean	SD	t-मूल्य	p-मूल्य
2	NEP–2020 अनुपालन स्कोर	40	85.34	7.22		

व्याख्या

t-मान 6.88 ($p < .01$) के परिणाम यह दर्शाते हैं कि IKS और NEP–2020 के क्रियान्वयन स्तर के मध्य अत्यंत सार्थक एवं सकारात्मक संबंध विद्यमान है। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि IKS-आधारित प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले शिक्षकों ने NEP–2020 में प्रस्तावित समग्र शिक्षा, बहुविषयकता, 21वीं सदी के कौशल, मूल्य-आधारित शिक्षा तथा चिंतन-मनन आधारित अधिगम जैसे प्रमुख घटकों को अधिक प्रभावशाली, स्वाभाविक और सफलतापूर्वक अपनाया। यह निष्कर्ष संकेत करता है कि IKS शिक्षण-दृष्टि न केवल शिक्षकों में वैचारिक समृद्धि और सांस्कृतिक गहराई विकसित करती है, बल्कि उन्हें नई शिक्षा नीति की अपेक्षाओं के अनुरूप अधिक सक्षम, सजग और नवाचारोन्मुख शिक्षक के रूप में विकसित भी करती है।

निष्कर्ष

1. भारतीय ज्ञान प्रणाली और शिक्षक क्षमता निर्माण के मध्य **अत्यंत उच्च एवं सकारात्मक संबंध** पाया गया।
2. IKS ने शिक्षकों के **व्यावसायिक विकास स्तर को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाया**।
3. NEP–2020 के सिद्धांतों को अपनाने में IKS-आधारित शिक्षकों की **अनुपालन क्षमता अधिक** पाई गई।
    - अध्ययन में पाया गया कि IKS शिक्षण-सीखने की प्रक्रिया को अधिक मूल्य-आधारित, अधिक प्रभावी, अधिक सूझ-बूझ से संचालित, अधिक आत्मनियंत्रित, अधिक नवाचारी बनाता है।
4. IKS-आधारित प्रशिक्षण को शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रमों में सम्मिलित करना अत्यंत आवश्यक और समय की मांग है।

सुझाव और सिफारिशें

- व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों में इंटर्नशिप और सहकर्मी शिक्षण को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, जहाँ अनुभवी शिक्षक नवप्रवेशी शिक्षकों का मार्गदर्शन करें। इससे गुरु–शिष्य परंपरा की भावना को पुनः सशक्त बनाया जा सकेगा।
- प्रशिक्षण सामग्री और चर्चाएँ मातृभाषा तथा स्थानीय भाषाओं में, और अधिकतम सहभागिता सुनिश्चित करने वाली रणनीतियों के साथ आयोजित की जानी चाहिए, ताकि शिक्षकों की अवधारणात्मक समझ और व्यवहारिक दक्षता में वृद्धि हो।
- शिक्षकों के व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों में भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge System) के सिद्धांतों, दर्शन और शिक्षण–पद्धतियों को अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया जाना चाहिए, जिससे शिक्षा अधिक प्रासंगिक, मूल्यपरक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बन सके।
- योग, आयुर्वेद, वैदिक गणित आदि पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक विषयों के साथ एकीकृत करने के तरीकों का प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए, ताकि शिक्षण प्रक्रिया अधिक समग्र और प्रभावी बन सके।
- शिक्षक प्रशिक्षण को केवल विषय ज्ञान तक सीमित न रखते हुए, शिक्षकों के चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व विकास और नैसर्गिक प्रतिभा के संवर्धन पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए, जिससे शिक्षा प्रणाली में गुणात्मक सुधार संभव हो सके।

Vol. 14, Sp. Issue: 1, December: 2025
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

- *Haloi, M., and Kharbirymbai, B.B.(2025). Integrating the Indian Knowledge system (IKS) into Teacher Education: Ateansformative Approach under NEP2020. International Journal of Science and Social Science Research, 3(2), 38-45.*
- *Kanojiya Aparajita, April (2024) Indian Knowledge Sytem (IKS) Perspective on Teacher and Teacher Educator Preparation.*
- *Mandavkar Pavan, April 2025, Indian Knowledge System (IKS) and National Education Policy (NEP-2020).*
- *Putra Rizaldi and Renaldo Nicholas, April (2024), Enhancing Teacher Performance through Capacity Buiding: A Comprehensive Analysis of Professional Development, Mentoring, and Organizational support, Reflection Education and Pedagogical Insights,2(1), 1-8.*
- *S.Lalithakumari and Dr. K. Vijayarani, March–April(2025). Effectiveness of Capacity–Building Programmer Among Teacher Educatos. International Journal for Multidiciplinary Research, ISSN- 2582-2160, Volume7, Issue 2,*
- *Shrimalibhoi Nirajkumar Ramanbhai and Patel Dr. Sujan kumar, March (2025),Integrating Indian Knowledge System (IKS) in Education: Role of Teacher, Schools and Governments, International Journal of Scientific Research in Humanities and Social Science, 2(2), 53-59*